RNI No. MPHIN/2004/14249

मासिक अक्षर वार्ता

मूल्य: 100 /- रूपये

वर्ष-18 अंक - 4 (फरवरी - 2022)
Vol - XVIII Issue No - IV
(february - 2022)

Indexed In International, Impact Factor Services (IIFS) Database and Indexed with IIJIF
Indexed In the International,Institute of Organized Research,(I2OR) Database
Monthly International,Refereed Journal & Peer Reviewed

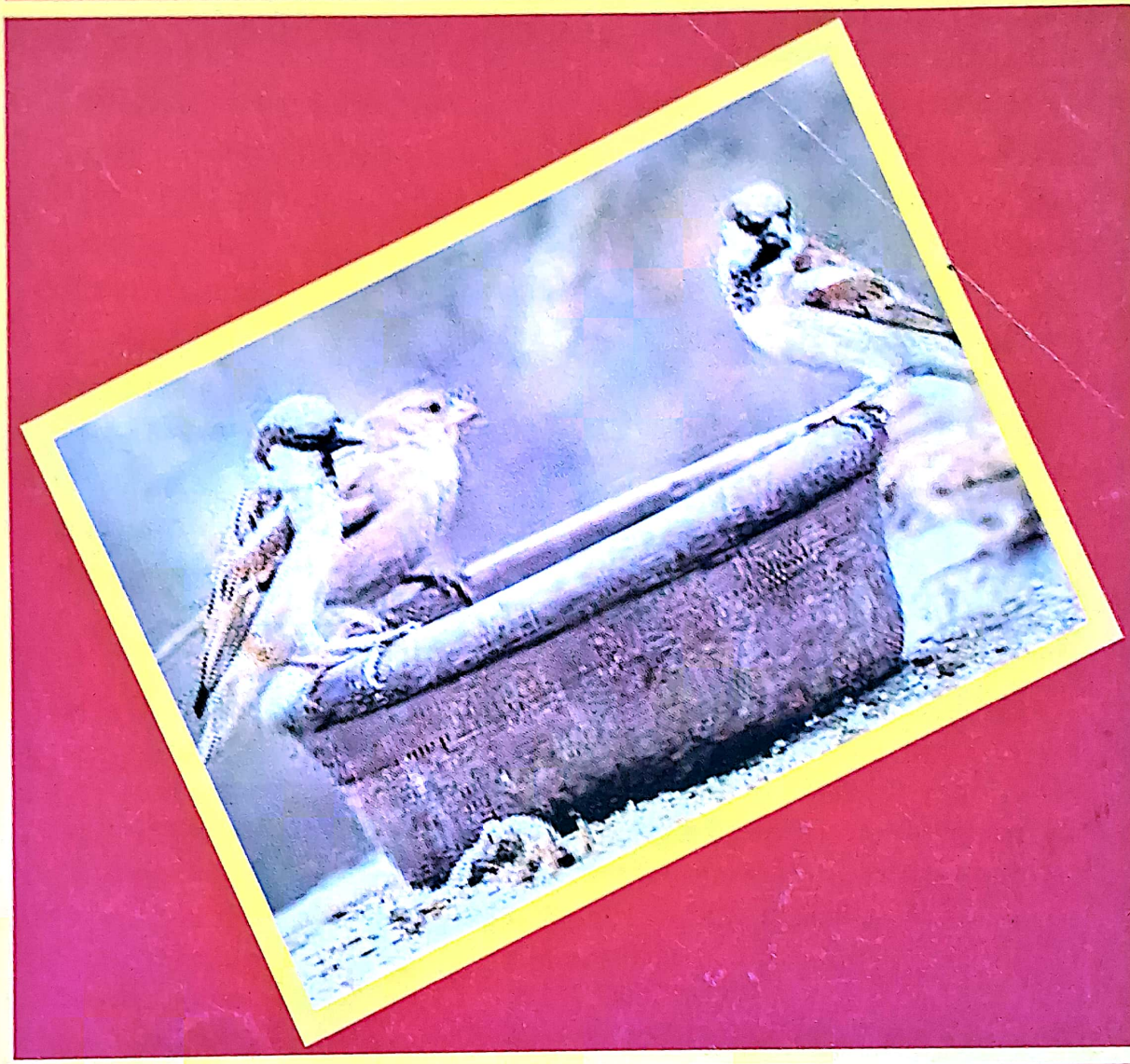

ISSN 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 5.125

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड शोध पत्रिका

» aksharwartajournal@gmail.com » www.facebook.com/aksharwartawebpage » +918989547427

AKSHARWARTA IS registered MSME with Ministry of MSME, Government of India
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

» लोक साहित्यान्तर्गत भोजपुरी ऋतुगीतों में संस्कृति
डॉ. कामना पण्ड्या 07

» गढ़वाली लोकगीतों में अभिव्यंजित प्रकृति और लोकाभिव्यक्ति
ऐपिन सिंह 11

» आधुनिक मगही काव्य में राष्ट्रीय भावना
डॉ. भरत सिंह 14

» 'गोदान' में प्रतिफलित सामाजिक चेतना
डॉ. कंचन पुरी 16

» भाववादी सौन्दर्यशास्त्रीय वातायन से आधुनिक हिन्दी साहित्यावलोकन
डॉ. मिश्कात आबिदी 18

» "स्मृति की रेखाएँ" कृति में महादेवी वर्मा द्वारा अभिव्यक्त स्त्री विषयक दृष्टिकोण
पूर्विका अत्री 21

» शिक्षा में आधुनिक तकनीक का प्रभाव : एक अध्ययन
डॉ. नीरू वर्मा, डॉ. मनोज कुमार 24

» उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 2019 और उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986
डॉ. मीना कीर 27

» मध्यप्रदेश में सौर ऊर्जा की संभाविता का अध्ययन
डॉ. दिनेश श्रीवास्तव, डॉ. मालती पटेल 29

» उच्च शिक्षा और छात्र गतिशिलता पर कोविड 19 महामारी का प्रभाव : मुख्य भूमि भारत से छात्रों के दृष्टिकोण
डॉ. नीरू वर्मा, डॉ. मनोज कुमार 31

» शास्त्रीय संगीत का संघर्ष और चुनौतियाँ : 19 वीं शताब्दी के परिप्रेक्ष्य में
डॉ. आन्शवना सक्सेना 34

» प्रभा खेतान कृत 'छिन्नमस्ता' : स्त्री के अदम्य साहस की कथा
विकास कुमार, डॉ. नवेन्द्र कुमार सिंह 37

» शताब्दी वर्ष : फणीश्वर नाथ रेणु के साहित्य में आँचलिक सन्दर्भ
डॉ. मौमिता सरकार 40

» हिन्दी साहित्य के विकास में लघु पत्रिकाओं का योगदान
डॉ. आलोक मिश्र 43

» कस्बाई सिमोन : स्त्री मुक्ति के विशेष संदर्भ में
विनीता 45

» 'जंगल के गीत' : आदिवासी संघर्ष कथा का औपन्यासिक दस्तावेजीकरण
सुभाषचन्द्र गुप्त 48

» उषा प्रियंवदा की कहानियों में चित्रित पारिवारिक समस्याएं
डॉ. वीणा. जे. 54

» चीन - पाक गठजोड़ : भारतीय सुरक्षा के समक्ष चुनौतियाँ
सत्येंद्र कुमार, अमित सिंह नेगी 56

» मौर्यकालीन सामाजिक व्यवस्था का वर्णन
डॉ. अनिल कुमार यादव 61

» प्रेमचन्द के उपन्यासों में सामाजिक एवं राजनैतिक तत्व
प्रतिभा सिंह 63

» समकालीन हिन्दी कविता का कथ्यगत अनुशीलन
रिकू मौर्या 65

» स्वरों का आध्यात्मिक महत्व
निलांभ नलवडे, डॉ. बी. पी. वर्षा 68

» थारू जनजाति का जीवन एवं संस्कृति
पूनम वर्मा, डॉ. कूमुद सिंह 72

» संत कबीर - समाज सुधारक
ज्ञानी राम 77

» भारत में आधुनिक महिला शिक्षा के पथ - प्रदर्शक : सावित्रीबाई व ज्योतिबा फुले
खेमराज आर्य, डॉ. परवीन वर्मा 80

» मानसिक रोगियों को प्रदत्त अधिकार : विधि के संदर्भ में
डॉ. रितु उमाहिया 83

» निमाड़ के बारेला आदिवासियों की लोक कथाएँ
विमला रावतले, डॉ. जगदीशचन्द्र शर्मा 89

» मधु कांकरिया के कथा साहित्य में चित्रित जीवन के बदलते रूप
डॉ. शबाना हबीब 93

» हिन्दी कथा - साहित्य और झारखण्ड का आदिवासी जीवन
सुष्मिता सिन्हा 98

» संत कवि सुंदरदास और उनका जीवन दर्शन
डॉ. सुनीता कुमारी गुप्ता 103

» भारत - पाक की लोकशाही - तानाशाही का अध्ययन
डॉ. रोहताश जमदग्नि 105

» चौथीराम यादव की आलोचनात्मक दृष्टि में दलित विमर्श
प्रियंका यादव 108

» Breaking the Barriers : The Challenges and Motivation of Learning Korean Language in india
Suman Yadav 110

» Accept, The Way you Look
Aman Kumar 116

Scanned with OKEN Scanner

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 5.125
Vol - XVIII, Issue - IV, February - 2022
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal

'जंगल के गीत' : आदिवासी संघर्ष कथा का औपन्यासिक दस्तावेजीकरण

सुभाषचन्द्र गुप्त

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, करीम सिटी कॉलेज, साकची, जमशेदपुर, झारखण्ड

झारखण्ड के एक महत्वपूर्ण कथाकार पीटर पॉल एक्का का एक चर्चित उपयास है-'जंगल के गीत'। वैसे तो कथाकार एक्का की सभी औपन्यासिक कृतियाँ मूलतः और समग्रतः आदिवासी समाज को विविध रूपों में और विविध कोणों से पहचानने की प्रक्रिया में सृजित हुई हैं। यह पूरा सच है कि आजादी के बाद जो जनतंत्र सामने आया है, दरअसल वह पूंजीवादी जनतंत्र रहा है और जो विकास-मॉडल लागू किया गया है, वह किसी भी कोण से न तो देष के आम लोगों के हित में रहा है और न आदिवासी समाज के हित में रहा है। नारा तो दिया गया है लोकतंत्र का, पर अर्थनीति और राजनीति के पीछे पूंजीवादी ताकतें-मुनाफाधर्मी ताकतें सक्रिय रही हैं जिनके लिए जल, जंगल और जमीन की लूट जरूरी रहा है। इस लूटतंत्र को सफल और मजबूत बनाने में पूंजीवादी ताकतें और सत्ता पर काबिज उनके राजनीतिक प्रतिनिधियों का आपसी गठजोड़ क्रूर भूमिका निभाता रहा है। अपनी कथा-प्रक्रिया में उनके उपंयास अपने पाठकों को आदिवासी समाज के खिलाफगढ़े जा रहे शक्ति-व्यूह से परिचित कराते हैं और उनमें ऐसी वैचारिक क्षमता पैदा करते हैं कि वे जान सकें कि आदिवासी समाज की समस्याओं की जड़े कहां हैं? यकीनन शोषणधर्मी और अमानवीय सत्तातंत्र, अर्थतंत्र एवं समाजतंत्र पर तीखा प्रहार करके ही औपन्यासिक कृति अपना नया सौंदर्यशास्त्र गढ़ती है। दो राय नहीं कि ''सच की खोज की भावना ही उपंयास को यथार्थवादी बनाती है।.....उपंयास में सामाजिक वर्गो, कानूनों, परंपराओं, संस्थाओं, परिवारों, नैतिकताओं और राजनीति के रूपों की छानबीन करते हुए यह देखने-दिखाने का प्रयत्न किया जाता है कि ये सब मानव-व्यवहार को और व्यक्ति की नियति को कैसे प्रभावित करते हैं?'' इस निकश पर कथाकार के उपंयास समग्रतः खरे उतरते हैं। उनके उपंयास आदिवासी समाज और संस्कृति के लिए खतरनाक शक्तियों, संगठनों, संस्थाओं और षड़यत्रों को उनके सही नाम और पता के साथ सामने लाते हैं और पाठकों में परिवर्तनकामी हलचल पैदा करते हैं।

कथाकार पीटर पॉल एक्का का उपंयास 'जंगल के गीत'वस्तुतः जातीय इतिहास-बोध की अभिव्यक्ति है। यह उपंयास उरांव समुदाय के गौरवषाली सांस्कृतक वैभव और संघर्शशील इतिहास से जुडे कुछ पक्षों पर केन्द्रित है। चूंकि कथाकार एक्का स्वयं उरांव समाज की उपज थे, जाहिर है कि अपने समाज के ओजस्वी इतिहास और उसमें अंकित संघर्ष-गाथा के प्रति गौरव का भाव उनके अवचेतन में रहा होगा। इतिहास की ओर लौटना, अतीत की ओर लौटना, परंपरा की ओर लौटना सही मायने में अपनी जड़ों की ओर लौटना है। लेकिन कोई भी प्रगतिशील लेखक जब इतिहास से या अतीत से या परंपरा से जुड़े विषय को रचना का संदर्भ बनाता है तो उसे ज्यों-का-त्यों नहीं रखता, वरन् उस पर एक नये सिरे से हस्ताक्षर करता है। यही कारण है कि इस उपंयास में कहीं वर्तमान की खिड़की से अतीत में झांकने का प्रयास है तो कहीं अतीत, वर्तमान में आवाजाही करता प्रतीत होता है। इस तरह यह उपंयास उरांव समाज के अतीत और वर्तमान के बीच एक जरूरी और सार्थक संवाद है।

दो राय नहीं कि उरांव समाज का इतिहास स्वाभिमान और संघर्श से आलोकित रहा है। इस समाज का इतिहास जितना ओजस्वी रहा है, उतना ही उदार व प्रेरक भी। उपंयास की कथा दो स्तरों पर समानांतर रूप से यात्रा करती है। एक ओर उंराव समाज की सांस्कृतिक परंपराओं, मूल्यों, मान्यताओं और छवियों का चित्रण है तो दूसरी ओर उरांव समाज की अस्मिता तथा स्वतंत्रता से जुड़े जुझारू इतिहास-यात्रा से साक्षात्कार है। उपंयास का आरंभ उरांव समाज के सांस्कृतिक पक्षों मसलन रीति-रिवाजों, पर्व-त्यौहारों, पारिवारिक संरचना, समाज-व्यवस्था, अनुष्ठानों, रस्मों आदि का बड़ा ही रागात्मक चित्रण कथा-प्रसंगों के माध्यम से हुआ है। कथाकार ने न केवल सांस्कृतिक गतिविधियों को अपनी आंखों से देखा है, वरन् सांस्कृतिकता को संस्कारों के रूप आत्मसात किया है, इसलिए उंराव समाज का सांस्कृतिक इतिहास अपने संपूर्ण जीवन-राग और सौंदर्य व माधुर्य के साथ इस उपंयास की कथा में विन्यस्त है। महत्वपूर्ण बिन्दु यह है कि कथाकार ने उंराव समाज की संस्कृति के उज्ज्वल पक्षों को ही केवल रेखांकित नहीं किया है, वरन् गैर आदिवासी समाजों एवं पश्चिमी आधुनिकता के प्रभाव के कारण उंराव समाज का जो सांस्कृतिक अवमूल्यन हुआ है, इन पहलुओं को भी उपंयास के कथा-विमर्ष में रखा है। दूसरे शब्दों में कहें तो उंराव समाज के सांस्कृतिक आयामों को समझने के लिए यह उपंयास एक संदर्भ-ग्रंथ की तरह प्रतीत होता है। सरना-स्थल, सरहुल, करमा जैसो पर्वो का चित्रण, घुमकुड़िया पडेलो, जात्रा आदि सांस्कृतिक पहलुओं को कथाकार ने पूरी आन्तरिकता के साथ कथा-संदर्भ बनाया है। उपंयास की कथा नैसर्गिक सौंदर्य के चित्रण और उसके प्रति अनुराग-भाव के वर्णन के साथ आरंभ होती है। झारखण्ड का सिमडेगा जिला कथाकार का जन्म-स्थान रहा है और इसी जिला का एक गांव है 'तुम्बाटोली' जो उरांव बहुल इलाका है और 21वीं सदी में भी विकास की दृष्टि से बहुत पिछड़ा है। इस उपंयास की कथा-पृष्ठभूमि तुम्बाटोली गांव से जुड़ी है। ज्ञातव्य है कि कथाकार की हाईस्कूल तक की षिक्षा सिमडेगा में ही पूरी हुई थी। उपंयास का आरंभ ही सरहुल पर्व के मौके पर 'तुम्बाटोली' गांव में फैले उल्लास व उमंग के चित्रण के साथ होता है-''पहाड़ी की तराई में बसे तुम्बाटोली के लोगों की जिन्दगी में एक नयी सुबह आ गयी थी। इलाके के लोग सदी (सरहुल) मनाने की तैयारी में हैं। कहीं

Scanned with OKEN Scanner